अंतरा-शब्दशक्ति

मेरे मन की अभिव्यक्ति

लघुकथा संग्रह

श्रीमती सपना परिहार

मेरे मन की अभिव्यक्ति

(लघुकथा संग्रह)

सपना परिहार

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-29-2

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © सपना परिहार

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

"Mere man ki abhivyakti by 'Sapna Parihar'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

भूमिका

हमारे आस पास कुछ ऐसा घटता है और उसे देख के आपने मन मे जो अनुभूति होती है, वही कलम द्वारा लिखी गयी मन की अभिव्यक्ति बन जाती है ।

मेरे कहानी संग्रह में भी कुछ ऐसी ही अनुभूति होती है। मैं जो देखती हूँ ,उसे महसूस करती हूं और अपने भाव गीत,कविता,लेख और कहानियों में ढाल देती हूं ।

मेरी कहानियों में जीवन से जुड़ी बातें है जो कही न कही हम सबके साथ घट चुकी है या हमने देख रखी है।हर बार नया विषय और नई समस्या मुझे उस पर लिखने को प्रेरित करती है।
और मेरे मन के यही भाव एक रचना का रूप ले लेते है।

मै मानती हूं मुझे साहित्य का कोई विशेष ज्ञान नही है । पर लेखन मेरी साधना है,मेरी मेहनत है जिसे मैंने कई वर्षों की तपस्या से हासिल की है।उसमें कोई मिलावट नही है और ना ही किसी और की रचनाएं है।जो भी मेरा संग्रह है वो मेरा अपना है किसी की नकल नही।

मुझे विश्वास है आप सभी को मेरा ये संकलन पसंद आएगा। इन्ही अपेक्षा के साथ आपकी शुभकामनाओं की शुभेच्छु,..

सपना परिहार

अनुक्रमणिका

1.	मौत	5
2.	दहेज	5
3.	आत्मसम्मान	6
4.	नजर	6
5.	चरित्रहीन	7
6.	फर्क	8
7.	ललिता	10
8.	माँ का पत्र	11
9.	रिश्ता	12
10.	राजा	14
11.	फैशन	15
12.	वसीयत	16

मौत

आज शहर के जाने माने रहीस सेठ रामप्रसाद का कुत्ता बहुत बीमार था। डॉक्टर उसके इलाज में कोई कसर नही छोड़ रहे थे। उधर पीछे नौकर वाले कमरे से रोने की आवाज आ रही थी, सेठजी के नौकर रामू का बच्चा बहुत बीमार था ।

रामू के पास दवाई के लिए भी पैसे नही थे ।

रामू सेठजी के पास पैसे माँगने पहुँचता है तो उसकी नजर उनके कुत्ते पर पड़ती है जो बड़े आराम से नर्म मुलायम बिस्तर पर लेता था । सेठजी डॉक्टर को उसकी फ़ीस दे रहे थे।

रामू ने सेठजी से अपने बच्चे की दवाई के लिए कुछ पैसे माँगे तो सेठ जी ने उसे डांट कर भगा दिया।

उस रात एक ही मकान में दो मौते हुई । एक सेठजी के कुत्ते की और दूसरी उनके नौकर रामू के बच्चे की।

दोनों की मौत में सिर्फ इतना फर्क था किसेठजी के कुत्ते की मौत इलाज के बाद भी नही टली और रामू के बच्चे की मौत बिना दवाई के हो गयी।

दहेज

अरे जल्दी जल्दी काम खत्म को लडके वाले आते ही होंगे पिताजी घर वालो को समझा रहे थे।

सीमा के लिए बड़े घर से रिश्ता आया था।

लडके के पिताजी समाजसेवी थे और लड़का डॉक्टर।

घर के सामने एक बड़ी सी गाड़ी आके रुकी, जिसमे लड़के के परिवार के लोग थे। पिताजी और भैया से सबको आदर के साथ बिठाया।

सब बात चीत के बाद के बाद लड़के के पिता ने कहा -"हम दहेज के सख्त खिलाफ है, हमे कुछ नही चाहिए। आप अपनी बेटी को तोहफे में एक बँगला, बीस टोला सोना और एक गाड़ी में विदा कर दीजियेगा।"

ये सब सुनकर पिताजी के चेहरे पर परेशानी के भाव साफ़ नजर आ रहे थे।

आत्मसम्मान

आज काम वाली बाई फिर देर से आई। सुमन का पारा चढ़ गया।

रोज-रोज का नाटक, जब भी घर में काम हो तो बाई हमेशा देर से आती या छुट्टी कर लेती है।

सुमन के घर में काम ज्यादा था और बाई के पैसे कम । बेचारी मजबूरी में काम कर रही थी।

सुमन पैसे के अलावा घर का टुटा -फूटा सामान ,कुछ पुराने कपड़े और खुद के काम न आने वाला सामान बाई को दे देती थी ।

चलो जैसे-तैसे बाई आ गई। सुमन खुश हो गयी क्योकि उसके यहाँ आज किटी पार्टी थी और घर में बहुत काम था ।पार्टी खत्म होने के बाद सुमन ने बचा-खुचा खाना बाई को दे दिया।

कामवाली बाई की आँखों में दर्द साफ दिखाई दे रहा था। आज उसने हिम्मत करके सुमन से कहा कि-"मालकिन हम गरीब जरुर है पर भिखारी नही। एक रोटी हम सूखी खा लेंगे लेकिन किसी का झूठा नही खायेंगे।"
आखिर हमारा भी "आत्मसम्मान" है।

नजर

रवि ने दूर से आते एक लड़की को बड़े ही गंदे अंदाज में देखा और अश्लील शब्दों की बौछार कर दी। वो बेचारी बिना कुछ कहे वहाँ से चली गयी।

रवि और उसके दोस्तों का रोज का यही काम था, लड़कियों को छेड़ना और परेशान करना।

आज फिर एक लड़की को उन्होंने जाते हुए देखा तो फिर शुरू हो गये वे सब के सब उस लडकी को परेशान करने।

जब लड़की ने पलट कर देखा तो रवि की नजर नीची हो गयी ।

सामने उसकी बहन खड़ी थी, जिसे वो और उसके दोस्त मिलकर छेड़ रहे थे।

चरित्रहीन

सुना है सामने वाले फ्लेट में रहने वाली सुमी के यहाँ कई लोगो का आना -जाना है। कॉलोनी की महिलाये आपस में खुसुर -फुसुर कर रही थी।

सुमी के आते ही सब मौन हो गयी, बस व्यंग भरी निगाहों से उसे घूरे जा रही थी।

मिसेज शर्मा- "इसके साथ रोज कोई नया मर्द होता है शाम को सारी शर्म हया को बेच दी है। अब तो कॉलोनी में रहना मुश्किल हो गया है।"

सभी ने हाँ में हाँ मिलाना शुरू कर दिया।

सुमी को इन सब की आदत हो गयी थी। एक अकेली लड़की का अकेले रहकर जॉब करना शायद समाज के ठेकेदारों को रास नही आ रहा था।

ये वही लोग थे जिनका खुद चरित्र बेदाग नही था।

सुमी को कॉलोनी की महिलाओ पर हँसी आ रही थी, जिनके खुद के पति उसे रोज देखकर अपनी आँखे सेकते है, वही रोज अपनी पत्नियोंको उसके चरित्रहीन होने का किस्सा सुनाते है।

फर्क

आज नेहा की ख़ुशी का ठिकाना नही रहा, वह अपने क्लास में प्रथम आई थी। उपहार स्वरूप विद्यालय के प्राचार्य ने नेहा को घड़ी भेट की।

नेहा रास्ते भर सोचती जा रही थी कि उसके मम्मी -पापा इस ख़ुशी के मौके पर उसे बहुत प्यार करेगे। लेकिन घर आकर नेहा ने देखा कि मम्मी -पापा नेहा के छोटे भाई को उपहार में साइकल दिला कर आये है क्योकि वह अपनी कक्षा में द्वितीय श्रेणी में पास हुआ है।

जब नेहा ने घर आकर सबको बताया कि वह प्रथम आई है तो किसी ने भी कोई ख़ुशी जाहिर नही की।

इसी तरह कुछ वर्ष बीत गये, नेहा ने इस वर्ष 10 वी की परीक्षा अपने जिले में प्रथम श्रेणी में पास की। नेहा डॉक्टर बनना चाहती थी और उसके लिये आगे की पढाई करना चाहती थी। पर पापा -मम्मी ने उसे मना कर दिया। अब नेहा का सारा ध्यान घर के काम -काज में निकलने लगा।

नेहा का भाई अमित अपने दोस्तों की सोहबत में बिगड़ गया और नशे का आदी होने लगा।

एक दिन नेहा के मौसा-मौसी अमेरिका से आये। वे लोग नेहा को बहुत स्नेह करते थे और उसे अपने साथ अमेरिका ले जाना चाहते थे। नेहा के मम्मी -पापा की सहमति से वे लोग अपने साथ नेहा को भी ले गये।

उधर नेहा का भाई गंदी सोहबत के चलते अब चौरी भी करने लगा था।

नेहा ने अपनी मौसी से अपनी इच्छा जाहिर की कि वह आगे पढ़ना चाहती है। उन्होंने ख़ुशी -ख़ुशी नेहा का दाखिला दिला दिया। नेहा

की ख़ुशी का कोई ठिकाना नही रहा उसके आगे पढ़ने का सपना पूरा होने जा रहा था।

अपनी लगन और मेहनत से आज नेहा ने डॉक्टरी की पढाई पूरी की और उसका पूरा श्रेय उसके मौसा-मौसी जी को जाता था।

उधर अमित को उसके गलत चाल चलन की वजह से उसे कोलेज से निकाल दिया गया। उसने अब अपने शौक के लिए माँ के जेवर भी बेच दिए ।घर का इकलौता बेटा होने के कारण माता-पिता भी उसे कुछ नही कह पाते थे।

नेहा अपनी प्रेक्टिस भारत में करना चाहती थी और इसके लिए वो अपने मौसा मौसी के साथ भारत आ गयी।

उसने अपनी प्रेक्टिस एक सरकारी अस्पताल में शुरू की। एक दिन उसने देखा कि उसकी माँ उसके सामने खड़ी है और अपने बेटे को बचाने की याचना कर रही है, उन्होंने नेहा को नही पहचाना क्योकि वह आज एक डॉक्टर थी।

अमित चौरी करके भाग रहा था तो किसी ने उसे गोली मार दी।

नेहा ने अमित का ऑपरेशन करके उसकी पीठ में से गोली निकाल दी।

आज नेहा की माँ उसे दुआएं देते नही थक रही थी जो कल तक उसे हमेशा डांटती ही रहती थी।

जब नेहा के माता -पिता को पता चला कि नेहा उनकी बेटी है जो आज डॉ. है। उसके साथ किये गये भेदभाव से आज वे शर्मिदा थे ।वे नेहा को घर ले जाना चाहते थे,लेकिन नेहा ने उनके साथ जाने से इंकार कर दिया।

वह अपने घर इसलिए नही जाना चाहती थी क्योकि उस घर ने उससे और उसके भाई में "फर्क"किया था।

ललिता

आंटी जी.... जैसे ही सुबह सुबह दरवाजे पर ललिता की आवाज सभी के कानो पर पड़ती, सबके चेहरे खिल उठते।

कहने को तो ललिता एक काम वाली बाई थी पर वो घर में सबकी चहेती थी। घर के किसी भी काम के लिए वह मना नहीं करती थी।

ललिता 25 वर्ष की साँवली,शांत स्वभाव की थी। उसकी पीड़ा उसके चेहरे पर साफ दिखाई देती थी,16 साल में शादी हो गई और कुछ सालो में वह 3 बच्चो की माँ बन गई थी।

थोड़े समय के बाद उसका पति उसे और बच्चो को बेसहारा छोड़कर चला गया।

इतनी छोटी सी उम्र में ललिता पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। तीनो बच्चों की जिम्मेंदारी उसके ऊपर आ गई, उसने लोगो क घरो में साफ-सफाई का काम करना शुरू कर दिया और अपनी गुज़र-बसर करने लगी। जब भी कोई उससे उसके पति के बारे में पूछता तो बेचारी रुआंसी हो जाती उसके पास कोई जवाब नहीं होता था लोगो की बातो का।

उसने तो अपने बच्चो के साथ जीना सीख लिया था। वो लाख खुश होने का दिखावा करती पर मेरी आँखें उसका दर्द पढ़ ही लेती ।जिसे जो अपनी दिखावटी मुस्कान से छुपाने की नाकाम कोशिश करती थी। आखिर मै भी एक औरत हूँ ललिता का दर्द मुझसे छुपा नहीं था।

सच, ललिता बहुत साहसी थी जो अकेले ही हर हालात का सामना कर रही थी। उस पुरुष प्रधान समाज मे जहाँ आज भी एक स्त्री की पीड़ा किसी को दिखाई नहीं देती।

माँ का पत्र

"राम तुम्हारी माँ का पत्र आया है, दीपा ने चिढ़ते हुए कहा।"
क्या लिखा है??? जरा पड़ना तो राम ने दीपा से कहा।
"क्या लिखा होगा यही कि सर्दियाँ आ गई,मुझे यहाँ से ले जाओ।"

हर बार का नाटक, बीमारी का बहाना बनाकर आ जाती है और पूरी सर्दियो में हमें परेशान होना पड़ता है उनकी देखभाल में।
मै कह देती हूँ इस बार मुझसे कोई उम्मीद मत करना,दीपा बोले ही जा रही थी। बेचारा राम अपनी बेबसी छुपा रहा था कि वो माँ को कैसे मना करे यहाँ ना आने के लिए।

माँ को अस्थमा था, सर्दी में तबियत ज्यादा खराब हो जाती थी इस कारण माँ सर्दियों में राम के पास आकर रहती थी।

राम ने माँ को पत्र लिखा- "माँ कुछ पेसे भेज रहा हूँ, अपनी देखभाल के लिये किसी बाई को रख लेना। मै इस बार तुम्हे लेने नहीं आ पाउँगा।"
पत्र में राम की विवशता मौन रूप से दिखाई दे रही थी।

रिश्ता

सुमित और प्रीति बचपन के दोस्त थे,स्कूल के साथ कॉलेज की पढ़ाई भी उन दोनों ने साथ-साथ की ।इन दोनों के अलावा इनके परिवार में भी काफी घनिष्ठता थी।

बचपन की शरारते छोड़कर वे लोग जवानी की दहलीज पर कदम रख चुके थे। जहाँ यह कहना गलत न होगा कि इस उम्र में हर कदम सोच समझकर रखना पड़ता है।मित्रता के साथ उन दोनों की रुचियों में भी समानता थी।

प्रीति और सुमित डॉक्टर बनना चाहते थे।पर प्रीति के घर की आर्थिक सिथति अच्छी नही थी ।इस कारण वो डॉक्टरी की पढ़ाई नही कर पाई। सुमित ने डॉक्टरी का इम्तिहान दिया और डॉक्टर बन गया।

जल्द ही सुमित के रिश्ते आने शुरू हो गए।प्रीति और सुमित के संबंध के बारे में लोग कई तरह की बाते करते रहते थे।पर उन दोनों को समाज की कोई परवाह नही थी ।उनका रिश्ता पवित्र दोस्ती का रिश्ता था।

सुमित के माता-पिता ने एक अच्छी लड़की देख कर उसकी शादी करदी। लड़की का नाम अंजली था। वे दोनों बहुत खुश थे।
शादी के बाद भी सुमित और प्रीति के रिश्ते में कोई कमी नही आई। सुमित जब भी परेशान होता तो प्रीति उसकी परेशानी दूर करने में उसकी सहायता करती।

अंजली सुमित को बहुत प्रेम करती थी पर लोगो की बाते सुनकर उसके मन मे संदेह का बीज पनपने लगा। उसने प्रीति को बुरा भला और उसके घर न आने की हिदायत दी।

पर प्रीति को बुरा नही लगा क्योकि एक लड़के और लड़की की दोस्ती को सब गलत निगाह से ही देखते है।

शाम को जब सुमित अस्पताल से घर आया तो उसे पता चला कि उसकी सबसे अच्छी दोस्त को अंजली ने बेइज्जत करके घर से निकाल दिया तो उसे बहुत गुस्सा आया और उसने अंजली को बहुत डांटा।

सुमित कुछ दिनों के लिए शहर से बाहर गया हुआ था ।घर मे अंजली और नोकर के अलावा कोई नही था।अचानक रात को अंजली की तबियत खराब हो गई ,नोकर ने तुरंत प्रीति को फोन लगाकर सूचित किया ।

प्रीति अंजली को अस्पताल ले गई और सुमित की अनुपस्थिति में उसकी दिन रात सेवा की।

सुमित जब घर लौटा तो पता चला अंजली अस्पताल में भर्ती है तो फौरन अस्पताल के लिए रवाना हो गया।

वहाँ अंजली को ठीक देखकर उसकी जान में जान आई।उसने प्रीति को धन्यवाद दिया और अंजली से कहा प्रीति मेरी बहुत अच्छी मित्र है हमारे बीच कुछ गलत नही है।

तुमने उसे कितना बुरा कहा फिर भी उसने तुम्हारी सेवा की।क्या एक लड़का- लड़की दोस्त नही हो सकते? मुझें खुशी है कि प्रीति के रूप में मुझे एक सच्ची और समझदार दोस्त मिली है।

यह सुनकर अंजली की आंखों में आँसू आ गए उसने प्रीति को गले लगा लिया । आज अंजली कक इन के रिश्ते से कोई एतराज नही था। क्योकि आज वह रिश्तों के मायने समझ चुकी थी ।

राजा

"राजा सामने वाली टेबल पर बैठे कस्टमर को चाय देकर आ "होटल मालिक ने बारह वर्षीय राजा से कहा जो उसके यहाँ बाल मजदूर था ।

गरीबी इंसान को क्या -क्या करने को मजबूर कर देती है। पढ़ाई-लिखाई की उम्र में उसे काम करके अपने परिवार का पालन -पोषण करना था।

पिता दारू में सारा पैसा उड़ा देता, माँ लोगो के घरों में काम करके जो भी लाती वो कम पड़ता था।मजबूरन राजा को भी काम करना पड़ रहा था।

एक दिन मेरा सामना भी उस प्यारे से बच्चे राजा से हुआ । मैले -कुचैले कपड़े, बिखरे बा, कंधे पर एक छोटी सी टॉवेल जो शायद टेबल साफ करने के लिए थी ।

मैंने पूछा-"क्यो करते हो ये काम, तुम्हे नही पता बालमजदूरी अपराध है,तुम्हे सजा हो सकती है।"

वो मुस्कुराते हुए बोला -"सजा से डर नही लगता आँटी पेट की भूख से डर लगता है ।"

सच मन मे सिरहन सी दौड़ गयी, उसकी बात से।

न जाने कितने ही "राजा" अपना पेट पालने के लिए कई फैक्ट्री,होटल,घरों और दुकानों पर हर रोज हम सबको दिखाई दे जाते है।

फैशन

"हाय हाय ये क्या पहन लिया तुमने चीनी "दादी जोर से अपनी पोती पर चिल्लाई।

अरे दादी इसे फैशन कहते है। आपके जमाने जैसे कपड़े अब नही चलते चीनी ने दादी को समझाया।

दादी अपनी पोती को ऊपर से नीचे तक निहार रही थी ,घुटनों तक जीन्स और बड़े गले का टॉप जिसमें से शरीर अंग आसानी से देखे जा सकते थे।

ऊपर से बेटा -बहू भी उसके पहनावे पर रोक-टोक नही करते थे। बेचारी दादी चाहकर भी अपनी पोती से कुछ कह पा रही थी। रह-रहकर उन्हें जमाने के लिबास याद आ रहे थे जो सलीक़ेदार और सहज थे।

आज हम जितने आधुनिक हो रहे है, फैशन के नाम पर रहन - सहन से लेकर खान-पान और पहनावे तक बहुत बदलाव आ गए थे। समय की मांग को देखते हुए अगर कोई नही बदलता तो उसे पुराने खयालात का समझ लिया जाता था।

दादी को डर था कि उनके बच्चे फैशन के नाम पर अपने संस्कार न भूल जाये, जो उनकी धरोहर है।

वसीयत

"सपना तुम्हारे पापा का फोन आया है।" राकेश ने सपना को जोर से आवाज लगाई, सपना ने दौड़ के मोबाइल राकेश के हाथ से छीन लिया। "पापा आप कैसे है?" बोलते-बोलते उसकी आवाज गले मे रुँध सी गई। आज ठीक एक साल बाद पापा का फोन आया था। माँ के जाने के बाद तो मायका छूट सा ही गया था उसका। भाई-भाभी अपनी ही दुनियाँ में मस्त और पापा भी अपने पोते-पोतियों में व्यस्त।

पापा ने कहा "घर आ जाओ मैं वसीयत बना रहा हूँ।"
पर पापा मुझे आपसे कुछ नही चाहिये सपना ने पापा से कहा। पर पापा ने तो घर बुलाने की जिद ही ठान ली थी। न चाहते हुए भी सपना और राकेश पापा के घर के लिए रवाना हुए।

घर मे प्रवेश करते ही भाई-भाभी के चेहरे पर तनाव की रेखाएं सी उभर आई। "मैं अपना आधा घर सपना को देना चाहता हूँ "पापा ने कहा तो जैसे भाभी के चेहरे से हवाईयां उड़ने लगी।

दीदी को क्या जरूरत है हिस्से की, भाभी ने कहा। उनका जब भी मन करे वो आ जाया करें, ये घर भी तो उनका है।

पापा जोर से चिल्लाये- "मुझे किसी की सलाह नही चाहिए"
मेरी बेटी ने आज तक कुछ नही माँगा, न कभी शिकायत की।
उसकी माँ ने मरते समय कहा था कि सपना को रहने के लिए मकान देना, वो हमसे कुछ नही माँगेगी।

सपना की आंखों से आँसू बहते ही जा रहे थे।

पापा ने वकील को बुलाकर आधा मकान सपना के नाम कर दिया। उसे समझ नही आ रहा था कि उसकी झोली भरी है या खाली। थोड़ा हिस्सा मिलने से बहुत से रिश्ते पीछे छूट गए। जो केवल पैसे की बुनियाद पर खड़े थे।

उसे नही पता कि वसीयत में हिस्सा मिलने पर खुश हो या रिश्ते टूट गए उन पर आँसू बहाए।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम – श्रीमती सपना परिहार

जन्म – 27.09.1974

शिक्षा – एम.ए. (हिन्दी, समाज शास्त्र) बी.एड़

निवास – जी./91, बिरला ग्राम नागदा, उज्जैन (म.प्र.)

विधा – छन्द मुक्त

उपलब्धियां – कई समाचार पत्रों में रचनाओं का प्रकाशन, साहित्य के क्षेत्र में कई संस्थाओं से सम्मानित साँझा काव्य संग्रह में कविताओं का प्रकाशन।

– आकाशवाणी इंदौर से काव्य पाठ का प्रसारण।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़
आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-29-2

मूल्य 40/-

१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क– ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com